

DPN 5479

Title : चण्डी / CANDI

Run. No. 6170

Cat. No.

Micro. No.

Subject *puran युग*

Religion : *Hindu* / Bauddha

Language : *Skt.* / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. *20.3 x 8*

Folios *47* Lines (in a page) *6*

Compl. / Incompl.

Beginning folia missing
Chapt. / act / *folia numbers are not written.* *पौ १५ / पौ १५ : २५५ अ० :*

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : *New* / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / *one side yellow*

Condition : *fine* / damaged by worms, rats, water / *पौ २ अ० : जले झुंझ*

Beginning, colophon, post-colophon :

Somewhere letters eroded,

End folia also are missing.

पौ १५ / पौ १५

उनादवि पाप त्या ४ नसुगानिच ॥ असुनासुगवसापकीचदिगस्तकनकृत
 ४७ रायख ॥ १८७३ ॥ चण्डिकत्वा नगावयमा ॥ नागभन ॥ १८७३ ॥ नपहं सि
 उसा ॥ नूसा उकामा ॥ सकतानरीसा ॥ त्वामग्निगाना नविपन्नना ॥ १८७३ ॥
 माग्निगाना ॥ प्रयगाप्रयानि ॥ १८७३ ॥ नत्कनयत्कद नत्वयाय ॥ धर्मदिवा न्दवि
 महासुना ॥ १८७३ ॥ नूपेन न केवदु ॥ १८७३ ॥ त्वाम्बिक न न्प्रकनागिका
 न्या ॥ १८७३ ॥ विद्यासु ॥ १८७३ ॥ विवक दीप ॥ १८७३ ॥ वायव्य ॥ १८७३ ॥ नकत्वदन्त्या ॥ १८७३ ॥

तार्क्ष्णिमहाभ्यकातः विगमयत्वं न दानिव विम्बमानक्रास्त्रियः
 वाग्धनाभयः जनयादस्यः वस्तानियः दानानतायः न थादिमध्यः
 नगुस्तिगात्वं परिपासि विम्बम॥ विम्बमन्त्रित्वं परिपासि विम्बं विम्ब
 त्रिकाधनसीति विम्बम॥ विम्बमन्त्रित्वं परिपासि विम्बं विम्ब
 त्वयित्कि नम्रा॥ दवी प्रसीद परिपासनाः त्रिती न त्रिर्ययथास
 नवधः दधूने वस्यः पापानि सर्व ऊगगाः प्रसमन्नयासः उत्पान

या कऊनिर्तांश्च महापसुर्गर्भा प्रसीद त्वंद विविग्धा हि
 हात्रिमि। उलाक वासिनी मीश। लाकानौ वनदाहव॥ ॥ दयूवाच॥ व
 नदाहं सनगभा। वनं यस्मिन् सच्छुधार्गं गृह्यं प्रयच्छामि ऊगनामपका
 नकम॥ ॥ दयूवाच॥ सर्ववाक्षप्रसमन। उलाकस्यास्ति सखिनि। अव
 मवत्त्वया कार्यमस्मद्वेति विनामर्न॥ ॥ दयूवाच॥ वेवस्व न न प्रा
 फ। अस्माविंभनिगमयूग। उफानि उफु। येवान्या। दूपत्स्य न महा
 स्रनो॥ नन्द। एमपगुरु ऊगा। य। एमदागर्कसं हवीं। नगस्तो नामयिष्यामि।

विष्णुवतनिवासिनि। पूनत्रप्यति नोऽयं नृपसदृशिवीरतः।
र्यह निष्णामि वेप्रचिरं मुदानवान्॥ तत्रयस्या च नानुग्रहः वेप्रचि-
न्महासुनात् नकादका रविष्यन्ति जतिमीकसमापमो ॥ गता माद
वगा ॥ स्वर्गमत्युताकचमानवा ॥ सुवका व्याहृतिष्यन्ति सतर्तनकद
निका ॥ त्रयश्च भगवर्षिका मनावद्या मनमृति। मृनिहिः संमुता
तमोः समुविष्याम्यथानिजा ॥ गत ॥ भगन न ज्ञात्त निनि क्रिया मि
य मूनीना कीर्त्तयिष्यन्ति मन्त्रजा ॥ भगती मिमिमान ॥ गता हम

स्वित्ताक मात्मदह समूहवे ॥ तविष्यामि सुता ॥ भके नादह ॥ प्राप्ता न
के ॥ भक मूनी निविष्यात् न दयास्याम्यहं उ वि। गते वचव धिष्या
मि। इर्गमाध्य महासुर्त ॥ इर्गदवीति विरव्यात् न भनामत विष्यति ॥
पूनश्च हं यदातीर्म नृपकृत्वा हिमाचत ॥ तक्रां सि क्रययिष्यामि मूनी
मागने सकात्र भगता गदामा मूनय ॥ सर्वस्वाद्यान ममूह्य ॥ ती
मादवीति विष्यात् न भनामत विष्यति ॥ यदा नृभरव्युत्ता के महा
वाधक निष्यति। गदाहं जामर्त नृपकृत्वा संखयययट ॥ जेता क

स्मार्तिनाथयः वधिष्यामिमहासूत्रं। आमनी निचमा लाकाः सु
अनि सर्वगः॥ इह त्वं यदा यदा वाचा दानवात् अत विष्णुनि। न दान
वमीर्याहं क निष्णाम्यनिसंक्रयं॥ ॥ इति श्रीमार्कंडेयपूना (म
सावर्णिकमन्त्रनन्दवीमहात्म्यनायायभीमुनिवधः॥ ॥ द
वाच॥ इति सुवेधमानित्यं स्मार्तिनाथसमाहितः॥ न स्याहं सकला वा
धं। ममयिष्याम्यसंभयं॥ मधूकेटलनागः महिषासुरनष्टागर्भः॥
कीर्तयिष्यामि यत्तद्वधं शुभं निः शुभं॥ मूषम्याः व उर्द्वर्षा

गास्तु वना गत्वा कः॥ उभकिमा रुवन्त॥ सा त्वं मितुं प्रणवेः स्वेन
दानेऽहं विहं मुना॥ माहाये तो इ नाधर्षा वसूतो मधूकेटलो प्रवाध
ः ऊगत्सामी नीयतामचूना तच्चावाधः क्रियतामस्य रुनुमना
महासूत्रो॥ ॥ मधिरवाच॥ उर्वं मुना तदा दवी नामसी नगर्वध
सा विधः प्रवाधः नाथय निरुक्तं मधूकेटलो॥ न ज्ञास्य नासिका
वाङ्ग हृदय एतत्तु अतः॥ निर्गम्य दमनतस्तु उक्ताः इत्येक

ऊ नमन ४७ गस्तु च ऊ ग जाथ सु या नू का ऊ ना र्दन ४७ उ का भू व ३ हि
म य ना रु न ४ सद द (म च नो) ॥ म पू के ट लो इ ना त्मा ना व नि वी र्थ पि ना ऊ
मो ॥ ऊ ध न क क म व रुं उ म्मा ऊ नि ना य मो ॥ समू त्वा य न ग स्ता र्था
यू ए ध र ग वा नू नि ४ प ५ व र्थ स ह या मि वा कू प्र ह न (म वि उ ४)
ता व प्प मि व सा नू लो महा मा या वि भा हि नो ॥ उ क व नो व ना ३ स्म
नो ॥ वि य ना मि ति क म व म् ॥ ॥ श्री र ग वा नू उ वा च ॥ ए व ना म य

म उ ह्यो म म व ध्वा पू र व पि ॥ कि म न न व न ना ४ ७ ना व डि वि ना
म या ॥ ॥ म वि नू वा च ॥ व क्षि ना र्था मि ति ग दा स र्व मा या म य ऊ ग
नू ॥ वि ता क ना र्था ग दि ना ॥ र ग वा क म त क म् ॥ प्री नो त्व स व यू ह न
ए त्म क स्त म्म नू ना व या ४ आ र्वा ऊ हि न य आ र्वा स ति त न प नि पू ना
॥ म वि नू वा च ॥ न ए थ यू क्ता र ग व ना ॥ म र्व च कू ग ज र ना ॥ क र्त्त
क स वे च्छि त्र ऊ घ न मि व सी ग या ४ ७ व म वा म म्म स त्रा व क्क म् ॥ स

सुगास्वयम् ॥ प्रतावस्यादवा मुः लय ४८ भूवदामि ॥ ॥ ॐ निम्ना
 मार्क ॥ सुयप्रा ॥ सावर्णिकमन्त्रन नदवीमहास्यमधूकेटव
 ४४ ॥ १ ॥ अवित्रवाच ॥ द वास्त्रमलशूङ्ग पूर्यमदमर्गपूनामहि
 व ३ सुनाममधिप द वानाश्च पूनन्दन ॥ गणसुनेर्महावीर्येर्द्ध व
 सेन्यपनाजिगम् ॥ जिह्वाचसुकतान्दवा निडातस्महि वास्त्रनधा
 गन ४ पनाजिगादवा ४ पयथा निम्नाकापमिमा ॥ पूनस्तुत्यगमास्तुजः
 उ अस्ममफमतिकामधमचत्रिउस्यविष्णुमधिकचुन्द श्रीमहाकातीदरना इन्नावीजंम
 कं हत्रीमकि ४ वायु गत्वं सर्वकुमसमनार्थ अहीदुलप्राप्तार्थ उपदिनिशान ४ ॥ ४

पञ्चमगत्रुधुनो ॥ यथावदुक्तयास्तुदमहिवास्त्रनचहिगमाजि
 दमकथयामास्तुदवाहितवविस्तनमास्तुर्थनाग्यनितनुनायम
 स्पवत्रुस्यवा अन्वाश्चधिकानांसः स्वयमवाधिमिष्ठति ॥ स्वगम
 त्रिनाकना ४ सर्वगतनदवगमा उवि विचननियथामर्त्यामहिवा
 स ३ नास्तना ४ गद ४ कथिर्गसर्वममनात्रिविचहिगमा गनमेशु
 प्रपन्ना ४ स्मावधस्तुस्यविचिन्नामा ॥ ॐ त्रिर्गम्यदवाना स्ववा

हिमसूदनशचकानकापममुधुःखकूटीकृदितानवोःगमाःमि
 कापमसूयचकिनावदनारुगशानिधुकाममरुजुकाःतुंझम
 भंकनस्यचाःअन्यथाःसैवदवानाःभकादीनांभनीनगशनिगर्म
 समरुजुःसुखैर्कसमगच्छुत॥अगीवगजसुःकूटं कृतनमिम
 पर्वतमादहससुसनासाःकासायाफदिगननमाःअउतुरुज
 रुजुःसर्वदवमनीनकुमा॥उवास्तंनदलजानीयाफलाकशय

14

मिथा॥यदलच्छुम्वकंजःसुनाजायगतमूरवमायाम्यनचारव
 ल्कमवारुवाविष्कृतजसा॥सोम्यनसुनयायुर्ममःसैवदुःखचात
 वतावात्रःभनचऊंघात्रुनिगम्वसुजसाःअवः॥तुंझनसुजसापादी
 नदसुत्याःइर्कनजसावसुनाःकनाकुत्यःकोवतंभचनसिका
 ॥नस्यामुदनाःहंलगःप्राजापत्यनगजसा॥नयनचिगर्यजुः
 गथापावकनजसा॥अवोवर्षधयासुजःअवभवनित्तस्यच॥

70

तदुच्यते मादुम्या गच्छन्मपनिर्ददो॥ प्रजापतिश्चक्रमात्तान्ददो
 वंक्रावामुत्तरम॥ समस्तगामकूपश्च॥ निजगम्भीन्दीवाकनथाका
 तश्चदहर्वाख्यं न सौचर्मचनिर्मलम॥ कीर्तादधामर्तहात्रम
 जनचनथाम्बन॥ चणमलिकथदिव्यकृष्णलकटकानिच॥ अ
 र्कचन्द्रकथामुक्कयनासर्ववाङ्मयान्नपूनागदधुवयकमनूह
 ममा॥ अर्जुनीयकनलानिसमस्तस्य सुतीष्ठ॥ विश्वकर्मददो

गले पनपुंशमिनिर्मितमा॥ अक्रास्थनं कन्यासि. तथा रथयुक्
 मनेमा अज्ञानपकेजामातां भिवस्पृन सिवापनामा॥ अददकुतधि
 कस्ये. पकेजकुशमिण्णरुनमाहिमवाचाहनीसिहं. नत्तानिविविधनि
 च॥ ददावमन्यसुनया. पानपापुनाधिपधमवधुसर्वनायाम्. म
 हामसिवितुधितम॥ नागरुनन्दुदोगस्येधलयः पृथिविमिमाभा अ
 नोनपिसुनेद्वी. लुषण्णायूधेकथा॥ समानिगाननादावे ४ सा

12

जातस्यासिनाकायास्यागयामासवेमिनु॥ इह नन्दुर्मखल्लो. गाने
 त्रिनयमक्रयमा॥ उर्वसं क्रीयमा॥ सस्सं न्यमहिवास्त्र॥ माहधन
 रूपं॥ जासयामासगागभात्ताकाधितु. प्रहात्रधमनकेवसु. थ
 पनाम॥ तामुतगातिगाधन्या. द्राणा. विदनिगातावगनकांशि
 दयन्यत्रादिनेमणनव॥ निष्ठासपवनमान्यास्यागयामासलगत्. नि
 पात्यप्रमथनीवामणधवगसा. स्सनशासिहं. हकुम्महादव्या ४ काप

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः ॥ सापि गदाक्रान्तसुयानिजमूखा
हृन् ॥ अर्द्धनिकान्त्रवापि दद्यावीर्यं संसृज ॥ अर्द्धनिकान्त्र
वासोयुष्माभामहसूत्र ॥ गयामहसिनादद्यात् ॥ भित्तिस्तुत्वा निपाति
न ॥ गगाहाहाकर्णसर्वदेष्टुसेन्यन्ननामगन् ॥ प्रहर्षश्चपन्नं जग्म ॥
सकलादवगागम् ॥ ७ ॥ उद्धृत्वा सुनान्दवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ॥
ऊगगगभर्षपतया न नृ ॥ ८ ॥ अष्टागम् ॥ ॥ ९ ॥ ति श्रीमार्कण्डे

यपूनासावर्णिकमन्त्रनदवीम्महत्स्यमहिषासूत्रवधः ॥
अधिरूपावा॥ गक्रादयः सनगभानिह गतिवीर्यगस्मिन्नासनि
सनाविवत्तवदद्यागानुदू २४ प्रभतिमभिनाधनासा वाग्निः ४ प्रह
र्षपूतकार्जमचात्रदहा ॥ ॥ दंकाउचु॥ दद्याययानगमिदंऊग
दात्ममक्यानिः ४ मघदं वगभमकिसमूहे मूर्त्त्या। तान्दमिकामसि
तदं वमहे विप्रकाम्पुनानाः ४ सविदधा ४ ३३ एनिसानायाय

गस्याऊमाहिर्षनूपं सापिवहामहामधनगः ४ सिंहारवत्सया ॥
रुस्यामिकामित्रः ॥ किनहितावत्पुत्रः ४ खप्रपाप्तिनदधिता। गगजवा
उपूत्रः ४ दवीचिक्कदभायके ॥ गंखप्रचमभासाह्मिगगः ४ साहून्महा
गऊ ४ कनभचमहासिंहं गभुकर्षऊगऊच॥ कर्षनभुकनदवीख
प्रननित्रकनूता। गगामहासनालथामाहिषम्वपूनाह्मिग ४ ॥ ग ४ थ
वक्रास्यामास ४ साकसचत्राचनभा। गगः ४ ऊहाऊगमागाचष्टिका

ॐ विष्णवे नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कृपितान् कदम्बान् नानादविप्रसीद पत्रमाहवगीतवाय सथा वि
नाभयनिकापवगीकृतानि विद्वांसो नन्दधूर्ने वयदकुमनत्री
गन्धर्वास्तु विपुलमहिषास्तस्यानं सम्मता ऊनपदसूधनानि न
बान्धवा यथासि न च सिद्धिर्धर्मवर्गः ॥ धन्यास्तु जवनिहतास्त
ऊहस्तु दाना यथासदास्तु दयदाहवगीप्रसन्ना धर्मासिद्धि विपुल
तानिस्तु देवकर्मास्तथाह न ॥ प्रतिदिनं सुकृती कर्ता ॥ १ ॥

यानि च न ताहवगीप्रसदास्तकथय पिरुतज्ञानन्दं दिननाहर्णस
गाहवसितीति मम वज्रका ॥ ४ ॥ स्तुते ॥ स्तुता ममितीति वसेलान् ददासि ॥
दानि ज्ञानं स्वयं ह्यहानिभिकत्वं दद्यात्तथापि कानकनभायसदाह
विष्णा ॥ जहिरुत कुगदपेति स्तुतये न ॥ कर्तुं नुनामनत्रकायविनाय
यापमा ॥ सर्वममस्तु मधिगम्य दिवं प्रयानु मस्तुति नमहि नानि निह
तिदवि ॥ हस्तु वकित्रहवगीनकर्ता मिरस्मस्तु साननिष्यहि ॥
पिभक्तुमा ॥ लोका प्रयानु निपकापि हि भक्तुपूना ॥ हस्तु ममिर्हवनि

नं छहि नं छहा धी॥ खजप्रहानि कन विम्वन लेसु (थ) (त्रे) मूलाय का
नि निवह नह (गो) रना सी। यत्राग ना वि लेय मं पुम दि न्खया ग्धा न
नं न व वित्ता कय नां न द न नु॥ इ ह ह ह ह म म नं न व द वि नी तं न पं न
ये न द वि विं म म उ स्य म न्ये ४ वी र्य म ह ह ह न द व प ना कु मा सी वे
नि छ पि प्र क टि ने व द या त्व य स्थं॥ कं नां प मा ह व उ म स्य प ना कु ल
स्य न प म म पुर य का र्य नि हा नि ह ४ वि ह क पा स म न नि छ न न
व ह क्का ल्य वे द वि व न द उ व न उ य पि॥ जे ला क म न द रि ह

नि पू ना म न न ज नं ल या स म न मू र्छ नि न पि ह ला। नी ना दि र्द नि पू ग म
ह य म प्पा स म म स्मा क म म न द स ना नि ह व न्न म स॥ मू ल न पा हि ना द वि
पा हि र व न्न न चा म्बि क। घं टा स्य न न न ४ पा हि चा प क्क नि ४ स्य न न च॥ प्रा
र्या न क प्र नी र्या च च छि क न क द क्रि (म)। ज म (म) ना स्य मू ल स्य उ ह न
स्यां न (थ) म्बि नि॥ सो म्या नि या नि नू पा मि जे ला क्क वि व न कि न। या नि चा
ह क धा ना मि ने न स्मा उ क्क स र्व न ४॥ ज वि न्वा च॥ उ र्वं मु ना स रे दि यो
४ क्क स र्व न न न ह व ४॥ ज र्वि ना उ ग नां धा जी न थ ग म्ब नू ल प ने ४ आ ह

क्वासमसे छिदले दिवो धये सुधुपिना। प्राह प्रासादस्मरुवीसमसा-
 मना-सुनाम॥ श्रीदयवाच॥ वियगां छिदमा॥ सर्वयदस्मत्तातिवांछिता।
 ददाम्यहममिप्रीत्यास्तवेन हि॥ सुप्रजिनादवाउच॥ ॥ लगवत्या क
 र्त्तुं सर्वं न किंचिदवमिष्यत॥ यदयं निरुतं न पुनस्माकं महिषासनः
 ॥ यदि चापि वनादयस्तस्यास्माकं मरुत्तनिर्मलं नार्त्तं सत्तात्वादि
 सत्त्वापनमापदः॥ यद्यमस्य सत्त्वादिस्तानि कथं न मननं न न
 रुद्धि विरुवे क्व न दानादिर्त्तपदी॥ ॥ वदयस्मत्तत्तत्तात्त्वं तव

दाम्बिक॥ ३२॥ अवित्रवाच॥ ॐ निप्रसादिनादवेर्कुगमात्थनथत्मनः॥
 तथैव कृतकाली च वत्तवान् हि नानुप॥ ॐ एवत्कथितं मूषु लला
 सायथापूनादवीदवमनीनया ऊगत्प्रयहिने विभी॥ पुनश्च गोनीदला
 त्सासमूहनायथावत्तावधायददृष्ट्या नां नथामुनिमुमुयाः॥ न क
 मयचलाकारां दवानां मूपकानिषी॥ न कुसुमयारव्यामं यथावत्कथ
 यामिन॥ ॥ ॐ निप्रिमा कुरु यपूनापेसावर्त्तिमन् न न दवीमहा
 म्म महिषासुनवेधमकादि मुनि॥ ॥ अवित्रवाच॥ पूनामुनिमु
 ॐ अस्य सफलिका उरुन च निउस्य न ऊ अवित्रनूदुपुन्द महासत्त्वतीदवना हीमाभक्ति आमनी
 वीजं सूर्यनलः सर्वकुं मसमनार्थं महिषरुतप्राप्ता ॥ ॐ यविनिषागः॥ २

सुखे नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ यादवी सर्वतु न घू माया रूप अ
संलिङ्गा नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ यादवी सर्वतु न घू
सिद्धि रूप असंलिङ्गा नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ यादवी
सर्वतु न घू भिव रूप असंलिङ्गा नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमान
मः॥ यादवी सर्वतु न घू चिग रूप असंलिङ्गा नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नम
स्तु सुखे नमानमः॥ यादवी सर्वतु न घू सुख रूप असंलिङ्गा नमस्तु
नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ यादवी सर्वतु न घू च उ रूप असंलिङ्गा

नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ ६० त्रिया भाम विष्ठाणी तुगाना
सुखितु यया तुग वसुतु न सुखे व्यापं दवी नमानमः॥ चिति रूप अया रु
त्तम न द्याप्यलिङ्गा ऊगनु नमस्तु सुखे नमस्तु सुखे नमानमः॥ मुगा
सुने ४ पूर्वमाती सुसंश्रया न था सुन उ अदि न वसु विगा क ना उसान ४
अतु रु उनी धनी उरानि तडा धरि रु कुचापद ४ यासी प्रन ८ सुख न दे
त्यगापिने नस्माति त्री भा व सुने च नमस्तु सुखे नमानमः॥ या वस्तु गा न तु स म वरु नि
न ४ सुर्वाप दार कि विन मुमूर्ति लि ४॥ ॥ अ वि नू वाच ॥ उर्वस्तु दारि य

काना न्दवाना न उपार्चनी स्नाउम ग्याययोगाय याङ्ग व्यान पनन्दन
 ॥ सावनी ला-सूना-सू १० हवहि मृत्युयन उका गनीन का मग सास्या ४ सम ह
 गाववीच्छिता ॥ सा १० ममेन क्रियन ॥ मु म्देत्यनिना कये ४ देवे ४ सम
 से ४ सम न निमु म् न घना जिने ४ गनिन का म्मयलुस्या ४ पार्चयानि ४
 सगासिका कोमिकी गिसमसु ४ न गाला म्म म्गीयन ॥ न स्यात्तिनि ग
 नाया नु क्वा लुत्सापि पार्चनी काहिक निसमाख्या गा हिमाचत क

34

नाश्रया ॥ न गाम्बिका म्प न रूपं विजा म्म सम नाहन माद द र्भ व पुम
 शुध तयो मु म् निमु म्मया ४ गार्या मु म्माय चारवा गा ५ ग व सम ना
 हना काव्या म्म मु म्मल नाऊ तासय नि हिमाचत ॥ नेव गा दृक्क चिद्रूपं द
 र्भ क न चिद्रु म्म म्माय नाक्ष म्प सो देवी गृह्य गा ५ स स न म्म न ॥ म्म नेन
 म निवा र्च श्री पा ग य नी दि म्म हि घा सा उ नि षु नि दे त्य नु ग म्म चो नु
 द्म म्म ह ति ॥ या निन त्वा निम म्म या ग जा म्म दी नी वे प्रता ५ ता म्म उ सम
 को नि सा प्र ग ता नि ग गृह ॥ नेवा व ग ४ समाया गा ग ऊ न त्म पू नन्द नाम ।

पानिजागननूधार्पितयेवावेऽप्रवारुप॥ विमानं हंसं सूर्यं कर्मन लिख
ति न श्रीं (॥) नत्तत्तमिहानीर्गं यदा सिद्धं धसाहु नभा निधि न वमहा प
द्म॥ सुमानीगाधन धनात्ता किं पुक्तिनीन्दोचा किं माताम हानप कीजा
मा॥ कुण्डक वानूध (॥) हकाश्च न मा विनिष्ठति। न थयं स्पन्दन वनाय॥ यू
नासीत्प्रजापतं॥ मत्स्यान्तुक्तानि दानाम्। न किं नी भत्तया हना। पा म॥
सहितं राजस्य। उक्तवप निग्रह॥ निष्ठु म्स्या किं जागा प्रसमस्तानं
त्तजागय॥ वक्ति नपि ददो उत्य मग्नि (॥) वचवास्नी॥ उर्वं देख्य उ

नत्तानि समस्तान्याह नानि। श्री नत्तम वा कत्या भी त्वया कस्मान्न गत्य
न॥ ॥ अवित्र वाच॥ निभम्भ निच॥ ॥ ॥ सग दाव धुमधुया॥ प्रवया
मासस्त्रीर्वं दूर्गं द्यामहासूत्रं॥ ॥ ॥ निच निच वक्त्वा सा गत्वा वच
नान्मम॥ यथा चात्यगिर्मा प्रीत्या न थ कार्यं त्वया तद्य॥ अवित्र वाच॥
सग उगत्वा यणस्तु (॥) मे ताद (॥) शनि (॥) मत्तन। ताश्च दवीं गत॥ प्राह स
द्रुमधूनया गिता॥ ॥ इत उवाच॥ दवी देख्य धन॥ ॥ ॥ रुजे ता कपन
मं धन॥ इतार्हं प्रविगस्तु न त्वत्स काम मिहागन॥ अवाह ता रु॥ सर्व

स्य ४ सदा द वयानिष्ठा निरुक्तिं ताखितदे त्यानि ४ सयदा रुग्णं सुखं ग ॥
 मम ३ ताक्क मखितं मम द वा व भानू ग ४ ॥ यद्गुणगमनं सर्वानुपाय
 मिपथकपथक ॥ ३ ताक्क वचनलानिममवग्नी न्य भव ग ४ ग ॥ थेव ग
 ऊनलानिहत्वा देव नु वारु न ॥ श्रीनादमथना हूत मभ्यनर्त्तममा म
 ने ४ उच्चैः ४ प्रवसु संरु न युमिपथ्यसमर्पितं ॥ यानि चान्यानि द व वृ ग
 न्वर्चैः ४ न एव चानलतृ गानितृ गानि तामिमर्ष्यै व ॥ ए न ॥ श्रीनलतृ
 गांत्वा द वि ताक म न्या मरु वर्य ॥ सात्वमस्मानु प्रागक्त यथा नल ३

ऊ वर्य ॥ माम्नाममानु ऊम्नापि निगु म् मूत्र विक्रम ॥ एऊत्वं चरु लापाजि
 नलतृ गासि वेय ग ४ ॥ पन मे भ्यर्य म उर्त्त प्राप्सु समस्य निग्रह ग ॥ उ न द
 ह्या समा ता च म त्य निग्रह गाम्नु ऊ ॥ ॥ ए वि नू वा च ॥ ॥ ॥ तू का सा ग दा
 द वी ग म्ही ना न ४ स्मि ना ऊ ॥ ॥ ॥ इ र्ग र ग व नी ए डा य य द न्ना र्य न
 ऊ ग न ॥ ॥ द वू वा च ॥ स त्य मू र्कं त्र या ना ऊ मि थ्या कि स्त्रि र्था दि न
 म् ॥ ३ ताक्क धिपति ४ मुम्हा निगु म् म्नापि ना द ग ४ ॥ किं त्व उ य न्प्र निरु

नैमिष्यगक्रियनकथमाश्रयनामत्यवृद्धित्वात्प्रतिष्ठायाकनाप्रा
 ग्गामाश्रयनिसंग्रामयामदर्थव्यपाहनि।यामप्रतिवताताकस
 मरुर्लरविष्यति॥ नदागच्छउमुष्ठागनिमुष्ठावामलस्रनशामांकि
 त्वाकिस्त्रिननाउपार्तिगक्राउमत्तघ॥ ॥ ३३॥ उवाच॥ अचसिफासि
 नैवत्वंदविबुहिममागन॥ ३४॥ तावक॥ ३५॥ मास्त्रिष्टुद॥ ३६॥ मुनिमुष्ठा
 या॥ ३७॥ अथयामपिदेत्याना॥ सर्वदवानवेयुधि।तिष्ठनिसंमुखदवि।किं
 पुन॥ ३८॥ स्मृत्वमकीका॥ ३९॥ आया॥ ४०॥ सकतायवा॥ सुत्क्रय्यधानसंयू॥ ४१॥

उम्हादीनाकीथनका॥ श्रीप्रयास्यसिसन्मुखम॥ सात्वंगच्छमयेवाका
 पार्थमुम्हानिमुम्हाया॥ ४२॥ कमाकर्षणनिर्द्वग॥ ४३॥ नवामागमिष्यसि॥ ॥
 दवूवाच॥ ४४॥ अवमनद्वलीमुम्हानिमुम्हा॥ ४५॥ निवीर्यवान्॥ ४६॥ किंकतातिप्र
 तिष्ठाया॥ ४७॥ यदनाताविनाप्रा॥ ४८॥ सत्वंगच्छमयाकन॥ ४९॥ यदगत्सर्वमादग॥
 ॥ ५०॥ नदावक्रास्रनआय॥ ५१॥ सचयूकं कनाउयत्॥ ॥ ५२॥ तिग्रीमार्क॥ ५३॥ पुयपू
 ना॥ ५४॥ सावर्षिकमचक्रनदवीमहात्म्यद्वगवाकं॥ ॥ ५५॥ अथिन्नुवाच॥ ५६॥
 त्याकम्भूवचादवा॥ ५७॥ सुद्वनामर्षपूनिग॥ ५८॥ समाचरुसमागम्यदेत्यनाज

यविस्तुनाशा नस्पद्र नस्प न द्वाक् मा क भु सचनान्न ४ सु का ध ४ प्राह
देत्या नामधिवन्धु मता चनमा ॥ रु धू मता चना तुल्यं स्वसे न्यपनिवा नि
न ४ नावानयवाता दू र्णं क भू क र्ष भवि कृती ॥ नत्यनिशामद ४ कश्चि
यदिवा निष्ठु न पत्र ४ सह न व्या मत्रा वापिय क्षा ग भर्तु उ व चा ॥ ॥
म वित्रवा च ॥ न मा रू फ स्रुत ४ श्री धु म दे त्या धू मता चन ४ क न ४ व व्या
सह प्रा म मसूना म्भं दु र्णं य यो ॥ सह दृष्टा ना न ना द वी लु हि ना च त र्णं

स्ति नामा ॥ ऊ म दो च ४ प्र या ही नि मूर्तं ४ म्भु नि गु म्भु या ४ न व त्प्री या
य र व नी म ह र्ण न म्भु पे ष्य नि । न ना व तान्न या म्भु य । क भू क र्ष भवि कृ
ता मा ॥ ॥ द व्वा च ॥ ००० दे त्या म्भु न स प्र हि ना व त वा न च त स म्भु न ४ व
ता न्न य सि ना म र्ण न न ४ कि न क ना म्भु म ॥ ॥ म वित्रवा च ॥ ॥ रु रू
क ४ सा ४ त्या धा व ला मसूना धू मता चन ४ रू का न नै व र्णं न म्भु स्म सा
च क ना म्भिका न न ४ अ थ कू र्णं म हा से र्णं मसूना म्भं न थ म्भिका । व व र्ण

सायकेली के. सुखमकिपत्र मधेष्टा गता धूतसुगठ कापात्कृत्वा ना
दं सुहेतवमाप पातासुतस नार्या. सिंह दद्या ४ स्ववाहन ४ कांक्षिक न
प्रहा न भदे त्या नास्य न चापनामा. आक्रान्ता चाधन मन्त्रा ऊघा नापुम
हासना ॥ कवाक्षित्या उ यामासु नखे ४ काक्षानिक सुत्री. तथा न त प्रहा
न म. मिर्ना सि क न वा नृथ क. विच्छिन्न वा द्रुमि न स ४ कगा क न त थप
न. पपो च नृनि न क्षीष्टा. द न्यथा नृन क म न ४. क. स न न दृत्तं सु

यत्री न म्महात्मना ॥ न न क सुनि म्म दद्या. वाहन मा गिका पिना ॥ ॐ
त्वा न म सुत न दद्या. निरु न नृम ता च न मा व लक्ष्म क यि र्ग क सु न द वी क म
नि म्म ग न ४ ॥ नृका प दे त्या धिप नि ४ ॐ नृ ४ प्रसू नि ता ध न ४ आक्राप
यामा सु च नो. च शुभ्र ॐ महा सु तो ॥ ह च शुभ्र म् शु व ले व द्रु ले प वौ नि
त्रि ने. नृग नृ न ग ता च. सा स मा नी य र्ग त य ॥ क ल क्षा क य व द्या वा
य दि व ४ स म या यू धि ४ सु च न सु ने वि नि रु ता न्य ना मा ॥ न स्या ह ना या नृ

ॐ श्रीं हच विनिपातिता। भी घुमागम्यगच्छा गृहीत्वा गामथमि काम ॥
ॐ गि श्री मार्क ॥ पुं य पूना ॥ एसावर्षि क म न च न न द वी म हा स्म पु रु नि
ॐ रु धू म ता च न व धा ॥ ॥ म वि नू वा च ॥ आ द्वा फा क न ना दे त्या धू ॐ
मू पुं पुं ग मा ॥ च उ न री व ता प ना य पु न त्थ य ना य धा ॥ अ ह र्च म ह
प्र र्च मि त्य वं यू ह ता त सा ॥ गृ ही उ का मी ती द वी ॐ च प दि म पा म य धा द
ह ॐ क न ना द वी मी व द्वा सा म्प व स्ति ना म ॥ सिंह स्था प त्रि ले त नु ॥ म
म रु नि का धू न ॥ न द द्यु गीं सु मा दा उ ॥ मू य म ॐ क नू य ना ॥ आ द ॥ ६

वापा सि ध ना क्थ न्प ग त्स्मी प ग ॥ ग न ४ का प धू क ना च न चि का ना
न त्री न्प्र ति ॥ का प न चा स्था व द न म्म सी व धू म त रु दा ॥ पू कू टी कू टी ता रु
स्था त ता ग रु त का द्रु गा मा ॥ का ती क ना त व द ना वि नि ४ क ना सि पा मि नी
॥ वि चि ७ ख द्वा री ध ना ॥ न न मा ता वि त्त व ॥ दी पि च र्म प त्रि ध ना ॥ ॐ
मा सा नि ले न र्व ॥ अ नि वि स्ता न व द ना ॥ कि क्ता त त न री व ॥ नि म न
न क न य ना ॥ ना दा पू त्रि न दि म्स्वा ॥ सा व ॥ ग ना रि प नि ना घा न य नी

महासुतानां सेन्यगणसुतादीनामरकयनगदतमापाश्रितार्हाक्रम
ग्रहियाधधमसमन्वितासमादायकरुस्तनमखचिक्रपवान्मान
नयेवयाधुनगेनर्थसात्रथिमासहनिक्रिपवकुदमनेधुवयन्य
मिहेनर्व॥ अवजग्रहवृषादमनेर्मथिगान्यपिावतिनानकदतसह
मसुताममहात्मनामममर्द्धरकयज्ञानात्रन्याधनाउयलथा
असिनानिरुगा४कचिखवांगगातिगा४जगमर्चिनाममसुता

अहिरुगास्तथा॥ कपनगदतंसर्वमसुतानान्निपातिगमादृष्टाव
हिद्रडावगाक्षतीमनितीवमामात्रवर्वमहातीमेहीमाक्रीनामहा
सुत४कृदयामासचकेधमृष्ट४क्रिफे४सहप्रग४गानिचक्राधन
कानि विममानानिगमखमावउर्यथार्कविम्वानिसुवद्रुनिघनाद
नमागताजहसागिन्व्यातीमहेनवनादिनीकातीकनातवकुन
दूदर्मदमनाकृता॥ जथयचमहासिंहादवीचधुमधवगागही

15
वाचास्पकं (१४) भिनसु नासि नास्ति दत्ता ॥ अथ मु (१५) पधवत्ता नृ
क्ष्वच शुनिपातिगभा नमप्य या नया दू नो साख प्रातिह न नूवा ॥ ह न
(१६) वनन ४ से नृ दृ क्ष्वच शुनिपातिगभा म् शुसमहावीर्य दि (१७) र
ऊरया उ न म ॥ भिनध शुसका ती च ॥ गही त्वाम् शुमवचा प्राह प्र च
शुहहास मिप्रमत्यय च शुिकाम ॥ मया न वा ण प ह नो च शुम् (१८)
महापुं य ऊ य ऊ स्यं शुम् नि शुम् रु रु निष्यसि ॥ ॥ अ वि नृ

वाचा नवानिगोग ना दृक्ष्व च शुम् (१९) महासु नो ॥ उवाच का ती कृ त्या
भी ततिग ४ शु का व च ४ ॥ य स्या च शु शुम् शु शु गही त्वत् नृ पाग ना
। चाम् (२०) निग ना ता क र्वा ना द वी र विष्यसि ॥ ॥ नृ नि श्री मार्क (२१)
य पू ना (२२) सा व शुि के म न च न द वी महा स्य च शुम् शु व व ४ ॥ ॥
अ वि नृ वा चा च (२३) च नि रु ह्य दे श्च म् (२४) च वि नि पा ति ग । व दू न य च
से न य ४ क यि न स्र स्र न भ न ४ ग न ४ का प प ना धी न च ना ४ शु रु ४ प्र

गापवान् । उद्योगं सर्वं सैन्यानां न्देष्टानामादिदं भूम्हा । अथ सर्ववर्ते
या ४४७ भीतिनूदायूधं धकन् नूनांच उता भीतिः । त्रिर्यामुस्ववर्ते
गा ४ काटि वीर्याभीपशुभः । दसनाना कृतानि वै । भर्गं कृतानि
वा भीतिर्गच्छुः समाद्रुया ॥ कातकादो हना सोर्या ४ कातकया
असना ४ यूर्वायसु क्रानिर्या ३ । आद्रुया खनिगमम ॥ ४४८
सुनपनि ४ ३ फ्राहेनवभासम ४ निरुगममहासेनः । सहसेवद्वि

वर्ग ४ आया नूवलि काटि दृष्टा । तसेन्यमनि तीषधमा । आमुने ४
नयामासुधनभीगगना नूनमा ॥ गत ४ सिंहमहा नादमनीवचान्
। घञ्जस्वभनगाजादानमिकावापर्वैरुयगा ॥ धनूश्चासिंहघञ्जना
नादाप्रतिगदिमूखा । निदादेहीषले ४ कातीजि (घविस्तानिगानना
॥ तत्रिनादमूपयूयदेयसेनो धु उदिममा । दवी सिंहस्तथाकातीस
नावे ४ पतिवातिगा ४ उकस्मिन्नननतय । विनाभायसुनद्विषा । हवायाम

नसिंहाना मतिवीर्यवतानिगा ॥ ४ ॥ वंक्रमणं गुरु विष्णुना न (येन) स्य व
य ॥ १ ॥ मनीषा विनिष्क्राम्य न दुपेक्षितिका यय ॥ ४ ॥ यस्य देवस्य यदुपेक्षितं
तद्वर्णवाहनमा ॥ न ह दवहिनं क्व किं न स नान्या ह सायये ॥ हंसयूक विमाना
(यः) साकृत्सु ७ कमं गतः ॥ ४ ॥ आयाग वंक्रम ॥ ४ ॥ भक्ति वंक्रमी सा हि धीयत
॥ माह स्वनीदृष्टा नूयः प्रिभूतवनधनिधी ॥ महाहिवतया प्राका च न
घावितव्यः ॥ कोमानी भक्तिरुक्ता च मयूतवनवाहना ॥ या ह मर्यादयो दे

स्या नमिका गुरु रूपिणी ॥ न (ये) व वेष्मवी भक्तिर्गुरु उपनिर्हृतिगा ॥ १ ॥
चक्रगदाभर्ज स्वर्गहस्तार्ययाययो ॥ यद्गुवा नार मण्डलं नृपया विजगा
ह ॥ ४ ॥ भक्ति ॥ साप्याययोग ७ वा नाहीन्विजगी न नूमाना नसिंही नसिं
हस्यविजगी सह दमस्वय ॥ ४ ॥ प्राफा न ७ सगक्रपः क्रिफ नक्र ७ सिंहनि ॥
वक्रहस्तान (ये) वेन्दी गऊना आपनि स्तिगा ॥ प्राफा सह ७ नयना यथा भ
फस्त (ये) वतान न ७ पतिव न स्तारिनी भ ना दव भक्तिरि ॥ ४ ॥ ह न्यना म

सुना ४ श्रीगुरुं मम प्रीत्याह वसिष्ठ का मा न ना द वी भनी ना ३ । कि निष्का नामि
रिष म ४ ॥ वसिष्ठ का भक्ति न त्यज्य । सिवा भन निना दिनी ॥ सा वा ह धूम्र ऊ टि
तु मी भन पना जिगा ॥ इ न तु ग च्छु रग वा ना र्थ ॥ शुभ्र निष्ठ म्र या ध वृ
शुभ्र निष्ठ म्र दान वा व नि ग र्ध गो ॥ य वा न्य दान वा स्त ॥ यू र्द्धा प स म्र
प स्ति गा ॥ जे ता क नि आ त र ना न्द वा ४ स लु ह वि बु ऊ ४ ॥ यू र्य प्र या न द
ना र्त्त ॥ ऊ दि जी वि उ मि च्छ था व ता व त या द थ व ह व ना यू र्द्ध का क्रि म ४ ॥

द द च्छ न द प्य लु म च्छि वा ४ पि भि न व न ४ य ना नि यू का दे न न न या
द वा भि व ४ स्वर्य ॥ भि व रू नी ति ता क सिं स्त न ४ सा र वा मि मा ग ना न
पि शु त्वा व वा द वा स र्वा र वा न म हा सु ना ४ अ म र्वा ४ पू रि ना ऊ म्र र्य
उ का या य नी स्ति गा न न ४ प्र थ म म वा य म कृ शि रि ४ ॥ व व र्ध न रू द न
म र्वा स्ता न्द वी म म ना न य ४ सा व ना अ रि ना चो म कृ त च ऊ प न धा न
॥ वि च्छ द ती त या धा न ध न र्म क र्म ह वृ रि ४ न स्या ग न स्त थ का

लीभूतपानविदानिगान्॥खडांगपाथिगांश्री.कर्वनीवचनरुदाय
कर्मउत्तुताक्रप.हगवीर्या.हगोजस४उंझणीवाकनाऊपू.न्यनय
नस्मधवति।मोहभ्वत्रीलिभूतन.नथचकुमवेध्रवी॥देत्याऊघान
कोमात्री.नथभक्तनिकापना.उेडीकृतिमपानन.मन(म)देत्य
नवा॥पुउविदानिगा४पृथ्वांनूधितोघप्रवर्षिम४उंउप्रहानवि
स्का.दंष्ट्राग्रकनवक्रस४वनाहमूर्त्यानापन.ध्रुवमचविदानिगा

शानखेविदानिगाधन्याहृकयनीमहास्रनात्॥नात्रसिंहीवचानाये
नादापूनिगदिमूखा।चाधुहहासेनस्रना४भिवद्रुयसिद्रुधिगा४पुउ
४पृथिव्यापनिगांस्कांश्रखादाथसागदा।ह्निमाहृगर्भकुड्ममर्दय
नम्महास्रनात्॥हृष्टात्पुपायेविविधेर्नधुदेत्यात्रिसेनिका४पलाय
पनाहृष्टादेत्यान्माहृगर्भदिगाभा॥याहूमस्याययोकुडात्रकवीऊ।
महास्रना४नकवीर्यदाहमो.यनत्यस्यभत्रीनन४॥समृत्यननिम

दि न्या न प्रमा भ सदा स्रत ४ य यू ध स ग दा पा नि नि नु भ क्का महा स्रत ४
न ग ८ से डी स्व च कु भ न क वी ऊ म ना द य न ॥ का ति ८ न न ह न स्या ८ न
स स मा व भ सि न मा ॥ स मू क स्तू न ना या डा ॥ सु डू पा सु स त्रा कु मा ४ था
व न ४ प नि ना सु स ॥ भ त्री ना ड क वि न्द व ४ ॥ ना व न ४ पू नू वा जा ना सु ही
र्य व त्र वि कु मा ४ न चा पि यू यू ध सु ७ ॥ पू नू वा न क र्त्त व ४ ॥ स र्म मा ह
रि न त्रू य ॥ भ सु पा ना नि ती ष भ मा पू न ध व कु पा न न क्र म स्य मि ना य

दा ॥ व बा ह न क पू नू वा सु ना जा ना ४ स ह प्र भ ४ वे क्क वी स म न वे न च कु
भ रि ऊ घा न ह ॥ ग द या ना द या मा स ॥ ने डी न म स्र त भ न मा वे क्क वी च कु
रि न स्य त्र धि न मा व स मू वे ४ ॥ स ह प्र ८ भ ऊ ग ४ धा र्फ ॥ ग न्य मा ८ भे र्म ह
स र्ने ४ भ क्का ऊ घा न को मा नी वा ना ही च न थ सि नी ॥ मा ह भ त्री णि भू ह
न न क वी ऊ म हा स्र त मा स चा पि ग द या दे य ४ स र्वा त्र वा ह न स्य थ क ॥
मा ह ४ का प प ना वि ष ॥ न क वी ऊ म हा स्र त ४ न स्या ह न स्य व क्क ४

भक्तिरूपादि हि दु वि॥ पयानथावेन को घस्त मासुक्तु गणनाशने श्रीसुनास
कृत गो-नसने ४ सकत ऊ गन्॥ व्याफ माती रुगादवा-रय ऊ म् नुरुम।
नामिष (ॐ) सुना नृष्टा च भिका प्राह सकु नामा उवाच काती चाम् मुनि
सुनम्वदनं कृत्वा मच्छु याग संलगा न क विन्द महासुनामा॥ न क विन्द
४ प्रतिवृत्त वक्तुं सा न न व मिगा। एक य नीच न न (ॐ) न इत्यत्रा न न
सुनामा॥ उवमव कय दे त्य ४ की भन काग मिष्टगी। एक मा गी स्त्रिया वक्तु

मवा शस्य निचाप न॥ ॐ ए क्का गान न गाद वी भूत ना-या न ना-
खन काती ऊ गृह न क वी ऊ स्य (ॐ) निगम॥ गगा सावा ऊ धा नाथ गद य
न उ च भिका मा॥ म या स्य व द ना ऊ ऊ ग दा पा ना सि का म पि॥ न स्या ह
स्य दे त्या ऊ व द स माव (ॐ) निगम। य न स ग स व क्तुं न चाम् मुनि
कृति। म् व स म् न नाय स्या न क पा ना न महासुना न॥ न च वा द व
मुपपो न स्य च (ॐ) निगम॥ द वी उ त न व क्तुं न वा ले न सि हि ज

॥ ऊघाननकवीऊऊ चाम्पूपीन (भा) सिमभास्यपातमहीपच
 ससुसहसमाहग ॥ नीनकधमहीपात् नकवीऊमहाहृनशान
 कुरुर्ममउत्तमयापूनीदभानप ॥ नधार्य हग (भा) ऊगा
 सिद्धदाहृन ॥ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपूना (भा) सावर्णि क म न न
 नदवीमहात्म्यनकवीऊवध ॥ ॥ अथिन्नवाच ॥ विचियमिदमा
 ख्यातं हगवत्तुवगामम दद्याध निगमाहात्म्यं नकवीऊवधमिर्ग ॥

तय (ध) च्छम्पहं (भा) उ नकवीऊ निपातिन । चकान् (भा) हृन त्रिभुम्
 धृ हनश्चभ्युचाहव ॥ हयमानंमहासेन्यं वित्ताकानर्षमूहहृन ॥
 अत्यधोव त्रिभुम्हापिमखायासुनसुनया ॥ नस्याग्रनसुपृष्ठया
 याधमहासुना ॥ सदक्षोष्ठपूठा ॥ कूर्वा हनुमपामयू ॥ अऊगम
 हवीर्य ॥ उम्हापिस्ववतेवग ॥ निरुक्तुवर्षि कांकापात्तुत्वायू
 माहृति ॥ नगायूहमनीवासी । दद्याधुनिभुम्हा ॥ भनवध

तमायातनसमासाकादवीर्गखमवादयत्। क्कमदधुपिधनूव
कानागीवइत्सहभा॥ पूनयासासचाकंता। निऊघधुस्वतनवासमरि
देत्यसेन्यानाकआवधविधायिमाभा॥ तन४ सिंहामहोदेस्वाजिनत
महामदे। पूनयामासगगनश्रीन॥ (थापदि॥ भादगा॥ तन४ काती
सगगमक्कमगाउयत्। कनात्यानन्निनादन। प्राक्कुनाह
गाधाज्जहहहसममिव। मिवइतीचकानह। ते४मदे।

मु४कार्पपनययो॥ इनात्मंसिष्ठमिष्ठमि। व्याऊहनीचकायदा
दाऊयत्पारिहिर्न। देवेनाकाभसंसिष्ठे४॥ मुमुना। यपाभकिम्
कावातामिहीयसा। ज्यानिवंकिकुगता। सानितकाते। सवा
हनादनमुम्हस्य। व्याफलाकययाननमानिर्घानिस्सनाधाना।
वानवनीयन॥ मुम्हकाचुनदवी। मुम्हस्यप्रहिनाचुनाना। वि
दस्वभनेन॥ ये४मन॥ भाथसहप्रम४॥ तन४साचणिकाकुहाभतना

ह्रिजघानगमासनदातिरुनल्लमो मृच्छिना निपयाहनागनानिधुम्
४ प्राप्यचगनामारुकार्मक ४ अजघानभनेर्दवी कातीकमनिमन
था ॥ पूनश्च कत्वावाङ्नामयूगन्दनूऊम्वन ४ ॥ चक्रायूधनदिनिऊकु
दयामासचलिकामा ॥ गगातगवनीकुछा ॥ इग्गात्रग्गापनाहिनी ॥ वि
कुदगानिचक्रालिखभने ४ सायकाभुगात्र ॥ गगानिधुतादगनग
दामादायचलिकामा अत्यभावगवेहर्कु देयसनासमाह ४ ॥ गगण

पगगजवाथु गदाक्षि कुदचलिका खलनासिगधनमसचभर्तृस
मादद ॥ गतरुर्कसमायार्क निधुम्ममनार्दनभाहदि विद्याधमूल
नवमविह्वनचलिका ॥ रिन्नस्यनस्यभूतन हृदयात्रि ४ रूगापन ४
महावतामहावीर्यक्षिपूत्रधावदन् ॥ नस्य निष्कामगादवी प्र
रुस्यस्वनवरुग ४ भिनपि कुदखर्जन गगासावयनकुवि ॥ गग ४ सि
हर्षखादाग्रं दक्षु कुर्भुमिनाधनामा असनासु सुथा काति भीव

इ गीत आपनान् ॥ कोमली भक्ति निहि त्रा ४ क वि न्न शु र्म महासुना
न ४ वं का भीम सु प्रगन गा य ना न्या निना क ता ४ मा ह श्व ती डि
न रि त्रा ४ य सु सु था प न ॥ वा ना ही उ सु घा न न न क वि न्न श्री क ना
उ वि ॥ ख सु ख सु च कु म वे श्म वा दान वा ४ क ना ४ व ४ वि डी
सा प्र वि मू क न ग था प न ॥ क वि दि न्न न र रा क वि न्न सु ना ह ता
इ कि ना आप न का नी नि व इ नी म गा धि पे ४ ॥ ॥ इति प्र ना र्क

पु य पू ना ए सा व र्मि क म च न न द वी महा स्य नि उ म्भ व ध ४ ॥ ॥ ५
वि न्न वा च ॥ नि उ म्भ त्रि रु न द द्वा आ ग रै प्रा म ह मि न मा ह न्य मा न व त च
व उ म्भ कू डा उ वी द च ४ ॥ व ता व त पा दू र्त्वं मा इ (ग ग र्मा व ह
न्या सा व त मा प्रि त्य यू ध स या मि मा वि नी ॥ ॥ श्री र
वा ह ऊ ग स यै दि नी या का म मा प ना प (भे ना इ र्म य व वि
म द्वि त्त ग य ४ ॥ ॥ म वि न्न वा च ॥ न र रा क वि न्न सु ना ह ता
मू र्वा त्त य म ॥ न स्या द्वा क नै ऊ म न न रा सी रु ना मि न ॥

दं वृ वाच ॥ अहं वि उ त्या व द्वा रि. निरु नू पे र्य दा कि ना. ॥ द
ये के व नि स्ता म्पा गो स्ति ना रा व ॥ ॥ म वि नू वा च ॥ न
हं द वा ४ उ म्पु स्य जा त या ॥ प (ध) गी सर्व द वा नी. न स न
न म म ॥ म न व र्ष ४ मि ते ४ स म्पु स्र थ म्पु (से व दान
त त त्य ४ सर्व ता क र्य क र्म मा दि वा न्य क्ता मि ग
न थ म्पि का। व र्ज ग नि दे य उ. स म्पु गी घा र्ह रि ४ ॥ म
न वा क्ता मि. दि वा नि प न म म्पि नी। व र्ज ती त म्प वा य. ई क

ज्ञान मा दि रि ४ ॥ ग न ४ म न म ने द वी. मा क्ता द य न सा ह न ४ सा पि त
ना द वी. ध न्पि क्क द च र्ति ४ ॥ क्ति न ध न्पि दे य उ. स म्पु म कि
द। वि क्क द द वी च क्क म. ना म प्य स क न स्ति ना मा ॥ ग न
य. म न य उ क्क गान् म न्। म्पु थ भ व रु ना द वी न्दे य ना
न स्या प न ग य वा उ र्व ज वि क्क द च श्रु का। ध न्म र्के ४ मि ग
चा र्क क ना म त म ॥ र्ग ना ध ४ स न दा दे य म्पि न ध न्वा वि स्तान। ४

रुम्भीर्नघानमन्त्रिकानिधनाद्यगः। विष्णुदायनगस्यम्भीर्नघि
४मवेष्टान्धपिसात्यभवत्ताम्भीर्नघम्यदगवान्॥ सम्भीर्नघ
सहृदयेदेत्यूर्जवः॥ दद्यात्तुष्टपिसादवी। नतनानस्य ताज्य
तप्रहात्राहिरुता। निपयानमहीनत। सदेत्यनार्जसहृद
त्थस्तिगः॥ उत्थत्यवप्रगच्छावेदवीर्जगनमास्तिगः॥ नपा
नाधनाय्यत्थनमचष्टिका॥ नियुद्धस्वतदादेत्यत्थष्टिक

दहार्त्तमूर्द्धमूर्द्धः॥ गत्यानादनघानमन्त्रिकानिधनाद्यगः। कत्स्ननाप्रदिगत्ररु
यगातिमहता। प्रतिमन्त्रमहानतत्तात्तुष्टः॥ सकलाताका॥ सम्भी
धेचकम्पित॥ चचातवसुधवत्तुष्टः॥ सकलात्तुष्टमहीधनाधज्योति
वाधमूर्द्धगामूर्द्धः॥ सिंहवाहिनीमा॥ उत्थूर्द्धमन्त्रनयत्थेनामृकिमत्रा
त्तमूर्द्धयः॥ दद्यात्तुष्टमूर्द्धसंत्तुष्टः॥ उत्तात्तुष्टममनानयत्तात्तुष्टात्तुष्ट
सन्तात्तुष्टमूर्द्धस्त्तुष्टात्तुष्टमूर्द्धः॥ अत्तुष्टमन्त्रादिनिकाधदाराधन

हिवास्तथा अथ अवगर्भं भव. न एव येन सन्ने हुं गहा सुदद. न
वी. व्याफ ताक उया त्रिषा ॥ पादाक्रान्ता न गत व. जिनीटा त्रिषिवा
नामाक्रान्तिना संवपागा ता. धनू र्क्षा निस्त्र न न गामा ॥ दि. न उ ऊ हु
प्र सं समना द्या प्सं हि गाभा गत ४ प्रव व ग य हुं. गया द व्यास्त दि
वा मा भुक्ता सु वृक्ष मू के नादी पि न दि ग न न मा न हि वास्त हुं न न
धि क्क ना र्था महास्तथा यूर ध न न न अ न्ये. ध उ न म्भ व ता

४ न थ नाम यू ने ४ व हि त्र द ग्रा र्था महास्तथा अयू ध ना यू गा ना सु. स
प्र सं महास्तथा पक्ष म हि ध नि यू ने. न सि नामा महास्तथा अयू गा ना भ
ने ४ व हि र्वा क ता यू यू न ए ग ऊ वा ऊि स रु मो ये न न के ४ प नि वा नि ग
व गा न थ ना का शा च. यू हुं ग स्ति त्र यू ध ना वि ण ता र्था यू गा ना सु प
स म हि न थ यू ने ४ य यू ध सं यू ए ग न. न थ नाम्प नि वा नि ग ४ अ य
व ग उ यू न ए ग. न थ ना ग रु ये व गा ४ य यू ध सं यू ए द व्या. स रु न ७ न

हस्तना॥ काटिकाटिसहस्रमु नथानान्निकथा॥ हया
नायूद्धगजानमहिवाहन॥ नामनेहिदिपात्रेधमकिहिस
रुथा॥ यूयूधसंयुगदव्यावजैपनउपदिलेकविचित्रिचिपू
किठकचिराभंरुथापन॥ दवीषप्रहात्रेसु नगांरुलुप्रचक्र
सापिदवीगनस्तानिभक्तान्धक्रानिचक्रिका॥ सीनयेवप्रविष्ट
ऊगमुमुर्वार्षणी॥ जनायस्ताननादवास्तुयमानास्तनचिनिहाम

मावास्तनदवधमक्रान्धक्रानिचक्रनी॥ सापिकुद्धाधनसटादव्यावाहन
कमनी॥ चवास्तनसेनयसु वनचिवरुगाभन॥ निस्तान्मसचंयाधय
धमानात्रणमिका॥ तयैवसद्यःसंस्तना गसांमनसहस्रमधयूयूध
पनउहिहिदिपात्रासिपदिले॥ नामयनास्तनगसांदवीकूपरेहि
ना॥ जवादयन॥ पटहा गसांमंस्वांरुथापन॥ मृदमीधनवा
नंमहिचूद्धमहासर्वाननादवीरिगुलन गदयामकिद्विदि

॥ स्वस्तिदिशि ध्वजं गच्छति ॥ निरुघानमहासूत्राभापातयामासुवे
 घञ्जस्त्रनविमार्हिनान् ॥ अस्त्रानुनिपाणनचङ्गाचान्यानक
 । कविद्विधाकगास्त्री ॥ ४ ॥ अत्रयामेकथपत्र ॥ विधाधिगानि
 दयाउविमनन । वंमृषकविद्विधंमृषतनहमृहना ॥ कवि
 मिगात्रमो । रित्रा ॥ मृत्तनवक्रहिनिनक्रा ॥ मनाधेनक
 नाजिन । सनानूकानि ॥ प्राप्तास्त्रमृचुलीदमर्दना ॥ के

हवध्विजग्रीवाकथपत्र ॥ मित्रांसिपुत्रनयथा । मयंमविदात्रिगा ॥ वि
 ध्विजर्जघास्त्रनपुत्रूर्याम्महासूत्रा ॥ ५ ॥ उकवाकेकिचन ॥ ४ ॥ कविद्वि
 धाद्विधाकगा ॥ ४ ॥ ध्विजपिचान्यसिनमिपमिगा ॥ मृत्तनवक्रहिना ॥ कव
 ययूधूदबागहीनपत्रमायूध ॥ ननुउधपत्रन ॥ यद्वल्युतया
 मिगा ॥ कवध्विजमिनस ॥ ४ ॥ अत्रमृत्तुहिद्याभय ॥ निष्ठमिष्टानला
 यनादवीमन्यमहासूत्रा ॥ पाणिगेनथनागएवेनस्त्रेधवस्त्रचना

अगम्यासाहवकुण्ड यथाहत्समहानमः॥ अगिनो घामहानयः
शुक्लविम्वृष्टमश्वास्तनसेनस्य चानमस्तनवाकिनामः॥ क
नगहत्तसेनमस्तनामनश्वास्तिका॥ निश्चक्रययथावद्विस्तृतदा
महानयमः॥ सचसिंहमहानादः मस्तकुम्भकस्तनशमनीनेत्यामन
नीमस्तस्तनविचिविचिन्नमि॥ दद्यागसेनैस्तनकुम्भकस्तन
स्तनेशायः॥ येष्टास्तुष्टवृद्धवाः॥ पूष्यवह्निमृचादिवि॥

मार्कः॥ यपूनासावर्णिकमन्त्रकदवीमहात्म्यमहिषास्तनसेनस्य
॥ अवित्रवाच॥ निहन्मानकसेनमवताकमहास्तनशमनानी
विद्रुनकापायः॥ योथास्तमश्वास्तिका॥ सदवीगनवर्षसंववर्षसमने
नशायथमन्त्रगितः॥ मन्त्रकोयवर्षसतायदशा नस्यक्तितागगादवीती
त्येवमन्त्राक्तनात्राजघानउत्रगन्वासेर्यनान्त्रैववाकिनामः॥ नि
कुन्दचधनस्तथा॥ धुक्चानिसमृद्धिगमाविद्याधवेवगणवृक्तित्रय

धनननीर्गसचमहास्रनशाहगनस्मिन्महावीर्यमहिषरूपचमूपतो
 आऊगमगऊनूरुधमनमिदमर्दनशासापिमर्किंमंमावाथद
 व्यासामन्विकाङ्गनमार्कंकानाहिरुगास्तुमोपागयामासुनिःप्रलाम
 ॥ हर्गमर्किन्निपतिगा नृशुक्राधसमन्विगशाचिक्रपचामनःप्रह
 वालैस्तदपिसाक्षिनगागनःसिंहसमस्त्ययगऊकृम्लाननस्तिगः
 वाहयूद्धनयूयूधननोवैमिदमनिष्ठायूधमा नौगनकोउगस्मा

ज्ञागमन्महिगनो॥यूयूभक्तमिहंनकुप्रहनेनमिदात्रैषो॥नमनात्त
त्वमूत्यन्यनिपत्यचमगमनिष्ठा॥कनप्रहत्रममित्रक्षमत्रस्यपु
नमाउदग्रध्वत्रैषोदद्यामित्तावकादिहिहिन॥दकमूहिगते
कनातधनिपातिग॥दवीकुहागदापाते॥धर्मगमासचाहुन
वाकतहिन्दिपातन॥वालेहामुनकधमा॥मामात्रस्यम
नरथेवचमहाहनुम॥विनजवधिमनन॥कज्ञान